शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

पारिवारिक जीवन
अध्याय 1: परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना

परिचय

पारिवारिक जीवन नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। अध्यायों की यह श्रृंखला घर की अगुवाई करने के उन आत्मिक सिद्धान्तों पर मनन करता है जो हमारी स्वस्थ्य मसीही परिवार बनाने में सहायता करते हैं। इसका प्रारम्भ बाइबल आधारित बुनियादी तत्वों की समझ से होता है, और जो आगे बढ़कर विवाह के लिए तैयार होना, जीवन साथी के बीच स्वस्थ पारस्परिक समझ, पूँजी का प्रबन्ध तथा बच्चों की अगुवाई के बारे में शिक्षा प्रदान करती है। इस श्रृंखला के आधार पर आत्मिक अगुवाई का आरम्भ अपने घर ही से प्रारम्भ होता है, तथा स्त्री व पुरूष की इसमें एक अनोखी भूमिका होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वर्तमान संसार में बहुत प्रकार के पारिवारिक तस्वीरें हमारे सामने आती हैं, यह अध्याय परमेश्वर द्वारा तैयार की गयी पारिवारिक तस्वीर को प्रस्तुत करता है। यह अध्याय विवाहित लोगों, अभिभावकों तथा उन जवान लोगों की मदद करेगा जो भविष्य में स्वस्थ्य सम्बन्ध बनाना चाहते हैं।

अपेक्षित श्रोतागण

इन अध्यायों के लिए अपेक्षित श्रोतागण वे मसीही लोग हैं जो मसीही विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और जो गम्भीरता के साथ परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। इस अध्याय से कलीसिया के उन अगुवों को भी लाभ होगा जो लोगों को ईश्वरीय सम्बन्धों व विवाह तथा परिवार के बुनियादी तत्वों की शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं।

अध्ययन कुँजी का निमार्ण एक अगुवे के रूप में आपकी सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

पारिवारिक जीवन
अध्याय 1: परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना

उद्देश्य

इस अध्याय का उददेश्य परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना को देखन तथा यह देखना है कि परिवार महत्वपूर्ण क्यों हैं।

अगुवों की टिप्पणी

यह अध्याय बाइबल के दृष्टिकोण से पारिवारिक जीवन की माप को सामने रखता है। बाइबल में विवाह व हमारे जीवन के लिए परमेश्वर द्वारा उत्तम योजना प्रगट की गयी है। हर एक परिवार एक दूसरे से अलग है, और इस संसार में बहुत से परिवार अनैतिक यौन सम्बन्धों, तलाक व छोड़े जाने के कारण टूटे पन का अनुभव कर रहे हैं। इस अध्याय में प्रतिभागियों की अगुवाई करते समय आप उनकी उनके जीवन में परमेश्वर की योजना को देखने में सहायता करें; उन्हें बताएं कि वे इस दुनिया में वे सयोंग से या किसी शारिरिक वासना के परिणाम स्वरूप उत्पन्न नहीं हुए हैं। जब परिवार परमेश्वर द्वारा ठहराई गयी योजना को समझ जाते तथा परिवार के सदस्य अपने आप को परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर देते हैं तो, वे परमेश्वर की महिमा और आदर का कारण ठहरते हैं। परिवार के भीतर एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव परमेश्वर के प्रेम का प्रारूप होता है, जिससे लोगों का ध्यान उस परिवार की ओर खिंचता है। चाहे आपके प्रतिभागी गण अपने समाज के संस्कृतियों के कारण अपने जीवन की भिन्न भिन्न परिस्थितियों में जीवन बिता रहे हों, लेकिन हमारे लिए एक मसीही परिवार को परिभाषित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है ताकि वे अपने विश्वास मत में दृढ़ हों तथा परमेश्वर की योजना के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें ।

- लोगों के समूह में कौन सी बात उन्हें परिवार बनाती है? एक नये परिवार का आरम्भ कब होता है?
- आपके समाज में लोग विवाह के बारे में क्या सोचते हैं? किसे विवाह करना चाहिए? कब करना चाहिए? क्यों करना चाहिए?
- परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री को क्यों बनाया? क्या स्त्री व पुरूष के जीवन का उददेश्य भिन्न है?
- आम विवाह व मसीही विवाह में क्या कोई भिन्नता पायी जाती है? कौन सी चीज़ें मसीही विवाह को परम्परागत या कानूनी विवाह से अलग करती हैं?
- आप किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? आप अपने परिवार, अपनी नागरिकता, अपने विश्वास, व्यवसाय और अपने पड़ोस के बारे में लोगों के विचारों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं की शिक्षा दें.

सिखाएं:

- **हमारा उद्देश्य व परमेश्वर की योजना:** हमारा परिवार इस धरती पर हमारी पहचान व उद्देश्य से जुड़ा हुआ है। हमारी पहचान सर्वप्रथम हमारे परिवार से होती है; हम अपने माता,पिता व हमारे साथ जीवन व्यतीत करने वाले लोगों से जुड़े होते हैं। हमे

परिवार की पहिचान व उद्देश्य को जानने के लिए परमेश्वर द्वारा बनाएं गये प्रथम परिवार अर्थात आदम और हव्वा से प्रारम्भ करना होगा।

- **परमेश्वर की श्वांस :** परमेश्वर ने मनुष्य जाति को जानवरों से थोड़ा अलग बनाया। हांलाकि कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि हम लोग जानवरों से ही निकली हुई प्रजाति हैं, लेकिन सत्य यह है कि मानव और जानवर में बहुत अधिक भिन्नता पायी जाती है। हम में परमेश्वर की श्वांस को फूंका गया तथा पूरा करने के लिए एक उद्देश्य दिया गया है जो किसी और प्राणी को नहीं दिया गया।

  - उत्पत्ति 2:7
  - अय्यूब 33:4

- **परमेश्वर का स्वरूपः** परमेश्वर की समानता में बनाए जाने के कारण हम इस संसार में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस प्रकार से कोई चित्रकार किसी व्यक्ति की हूबहू तस्वीर बना सकता है फिर भी उस तस्वीर की अपनी अलग विशेषता होती है ठीक उसी प्रकार से हम भी परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये हैं लेकिन हम शरीर तथा वह आत्मा है। हम उस संसार में परमेश्वर को प्रगट करते हैं जिसे उसे जानने की आवश्यकता है।

  - मसीही परिवारों में परमेश्वर की समानता पायी जाती है; पति द्वारा पत्नी को प्रेम किया जाना मसीह द्वारा कलीसिया को किये गये प्रेम को दर्शाता है। पिता द्वारा बच्चों के प्रति प्रगट किया गया प्रेम हमारे प्रति परमेश्वर पिता के प्रेम को दर्शाता है।
  - उत्पत्ति 1:26–27 में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने ठाना कि वह अपने ही स्वरूप में एक प्राणी की रचना करे। मनुष्य को छोड़ और कोई प्राणी परमेश्वर की समानता में नहीं बनाया गया यहां तक कि स्वर्गदूत भी नहीं! स्त्री और पुरूष दोनों को परमेश्वर ने अपने हाथों से बनाया; परमेश्वर की निगाहों में दोनों ही कि समान कीमत, अहमियत, मान्यता है।

पूछें:

छोड़ा रूककर अपने प्रतिभागियों से निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें। यदि उनके उत्तर अलग होते हैं तो कुछ समय और चर्चा करें।

- मानव जाति की सृष्टि का क्या उद्देश्य था?
- परमेश्वर ने हमारी रचना क्यों की ?

प्रतिभागियों के विचारों को सुने, या इस अध्याय के परिचय में दिये गये उत्तरों पर पुनः विचार करें। उसके बाद चर्चा करें कि समाज जीवन के उद्देश्य व अभिप्राय के बारे में क्या कहता है (पैसा कमाना,शक्ति या समृद्धि प्राप्त करना इत्यादि)। तदपश्चात पूछें:

- परमेश्वर द्वारा हमारे लिए तैयार की गयी योजना से यह किस प्रकार अलग है?

सिखाएं:

- **परमेश्वर को महिमा दें**: हमारे जीवन के बहुत से उद्देश्य हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य परमेश्वर को महिमा देना है। हम उसकी आज्ञा पालन करने, उसकी इच्छाओं को पूरा करने तथा दूसरों को उसकी महानता बताने के द्वारा उसकी महिमा करते हैं। हमारे जीवन के द्वारा परमेश्वर की समानता व स्वरूप प्रगट होने से लोग अपने आप परमेश्वर की ओर आकर्षित हो जाते हैं।

  - मीका 6:8
  - 1 कुरिन्थियों 10:31
  - भजन 86:12

- **सहभागिता निभाने के लिए बनाए गये:** यह सम्पूर्ण मानव जाति का उद्देश्य है–क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अकेले जीवन व्यतीत करें या अकेले अपना बोझ उठाएं। उसने हमें इस तरह से रचा है कि हमें एक दूसरे की जरूरत पड़ती है, और उसने हमें इसलिए ही एक समूह में रखा है कि हम मिलकर उसकी योजना को पूरा कर सकें। इस तरह के तीन प्रमुख समूह पाये जाते हैं:

1. परिवार
2. स्थानीय कलीसिया
3. सार्वभौमिक कलीसिया

उपरोक्त समूहों में से प्रत्येक ईकाई अपने अनोखें ढंग से परमेश्वर की योजना पूरी करती है। हर एक समूह अनेकों छोटे छोटे समूहों से मिलकर बना होता है। परिवार बहुत से सदस्यों से मिलकर बना होता है जो आपस में एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसी प्रकार एक कलीसिया बहुत से परिवारों से मिलकर बनती है। तथा बहुत सी स्थानीय कलीसियाएं मिलकर एक सार्वभौमिक कलीसियाओं को बनाती है। इन अध्यायों में हम मूल्यांकन करेंगे कि परिवारों को परमेश्वर के साथ किस तरह का सम्बन्ध होना चाहिए तथा परमेश्वर को महिमा देने में उनकी क्या भूमिका है।

❖ **परमेश्वर ने परिवारों को बनाया है:** हो सकता है कि आप यह सुनकर अचम्भा हो कि परिवार परमेश्वर की योजना है। बहुत से अन्य अनुसंधानों के समान विवाह पवित्र, विशेष और परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे लिए परमेश्वर द्वारा बनाई गयी योजना को जानने के लिए आईये हम सबसे पहले परिवार पर ध्यान दें।

➢ उत्पत्ति 1:26–31 तक पढ़ें। वहां लिखें कुछ महत्वपूर्ण सच्चाईयों पर ध्यान दें:

- परमेश्वर ने स्त्री और पुरूष को अपनी ही समानता में बनाया। मनुष्य के अलावा किसी और प्राणी को परमेश्वर की समानता में नहीं रचा गया ।
- परमेश्वर ने उसे आशीष दी। हमें परमेश्वर के साथ बातें करने की एक विशेष योग्यता प्रदान की गयी है जिसे सारी सृजी गयी सृष्टि महरूम है।
- परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी कि वे फूले फले और सारी पृथ्वी पर भर जाएं। यह उन्हे दिया गया पहला आदेश था कि वे परिवार के रूप में रहें और बच्चे जनें। इस ज़िम्मेदारी को कभी भी अकेला पूरा नहीं किया जा सकता था और जिसके लिए उन्हें एक साथ रहना ज़रूरी था।

➢ **उत्पत्ति 2:15–25 पढ़ें।** यहां पर दी गयी कुछ महत्वपूर्ण बातों को देखें। यह आदम और हव्वा द्वारा आज्ञा उल्लंघन किये जाने से पहले की बात है, उस समय तक वे परमेश्वर के साथ सिद्ध संगति में जीवन व्यतीत किया करते थे।

- मनुष्य को बाटिका में काम करने व उसकी देखभाल करने के लिए रखा गया था। उसका कार्य अपने कामों द्वारा परमेश्वर की महिमा करना था।
- परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा और कहा बहुत अच्छा है –सिवाय इस बात के कि मनुष्य अकेला है। यह एकमात्र ऐसी चीज़ थी जिसके बारे में स्वंय परमेश्वर ने कहा कि यह अच्छा नहीं(मानव जाति में बीच में पाप आने से पहले)।
- परमेश्वर ने पुरूष से मेल खाने वाली सहायक स्त्री को उसी में से रचा।
- स्त्री को सहायक ठहराने का अर्थ यह नहीं है कि स्त्री की अहमियत कम है वरन उसकी अपनी अलग भूमिका है। पुरूष के अन्दर किसी चीज़ का अभाव था जिसे स्त्री के द्वारा पूरा किया जाना था। (ध्यान दें कि परमेश्वर पिता उसकी पवित्र आत्मा को हमारा सहायक कहता है, लेकिन निश्चय ही पवित्र आत्मा आदर के योग्य है। यूहन्ना 14:26 देखें)

❖ **बाइबल आधारित पुरूषत्व व नारित्व:** परमेश्वर ने स्त्री व पुरूष को समान अहमियत, महत्व व आदर, सम्मान दिया लेकिन उसने उन दोनों को ही भिन्न–भिन्न भूमिकाएं प्रदान की। हर समाज में स्त्री व पुरूषों की अलग अलग भूमिकाएं होती हैं। मसीह होने के नाते हमें परख करनी चाहिए कि बाइबल के प्रकाश में हमारा समाज या संस्कृति स्त्री व पुरूष के बारे में क्या कहते हैं।

➢ **विवाह में स्त्री व पुरूष:** विवाह में अर्न्तगत ठहराई गयी पुरूष व स्त्री की भूमिका के अनुसार पुरूष को परिवार की सुरक्षा करने, अपनी पत्नी को प्रेम करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी तथा स्त्री को पति के अधीन रहने और उसका आदर करने के लिए कहा गया। इस सम्बन्ध में कोई छोटा या बड़ा नहीं है, बल्कि दोनो में एकता है– और वे दो मिलकर एक हैं। जिस रिश्तें में होकर पति अपनी पूरी क्षमता में अपनी पत्नी की अगुवाई करता है, और उसे अपने समान प्रेम करता है और वह स्त्री बढ़े सम्मान के

साथ मसीह की समानता में उसकी अगुवाई को स्वीकार करेगी। यह ही बाइबल आधारित वैवाहिक दृष्टिकोण है:

- इफिसियों 5:22-33
- 1 कुरिन्थियों 11:3
- कुलुस्सियों 3:18-19
- 1पतरस 3:1-7

➢ पूरक भूमिकाएं : स्त्री व पुरूष की भूमिका मिन्न परन्तु एक दूसरे के प्रति पूरक हैं। फिर भी कई बार जीवन व्यतीत करना हमारे लिए जटिल हो सकता है। बाइबल में कहीं पर भी पुरूष को अपनी पत्नी का शोषण करने, चोट पहुचाने, अस्वीकार करने या उसे तुच्छ जानने का सुझाव नहीं दिया गया है। निम्नलिखित तालिका स्त्री व पुरूष की भिन्न भूमिका को दर्शाती है।

पति की बाइबल आधारित भूमिका	पत्नी की बाइबल आधारित भूमिका
• अगुवा • जिम्मेंदारी निभाता है • परिवार की ज़रूरतों को पूरा करता है। • प्रयोजन करने तथा समाज में अपना स्थान बनाने के लिए काम करता हे। • अपनी पत्नी के लिए अपने प्राणों को न्यौछाव करने के लिए तैयार रहता है। • अपने परिवार पर हुक्म नहीं चलाता बल्कि बढ़ी सज्जनता के साथ अपने परिवार की अगुवाई करता है। • अपनी पत्नी का आदर करता है। • बच्चों को अनुशासित, अगुवाई व निर्देशित करता है। इफिसियों 5:25, 1 पतरस 3:7, 1 तीमुथियुस 3:4–5, 5:8	• सहायक • घर सम्भालती है • परिवार की ज़रूरतों को पूरा करती है • पति की बुलाहट को पूरा करने में मदद करती है। • दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने का प्रयोजन करती है। • अपने हाथों से काम करती है, लघु उद्योग प्रारम्भ करती है। • घर व बाहर के व्यापार करने में चतुर व सावधान होती है। • पति के अधीन रहती, उसे प्रेम और उसका आदर करती है। • बच्चों से प्रेम व देखभाल करती व उन्हें पढ़ाती है। नीतिवचन 31:10–31, तीतुस 2:4–5, 1 तीमुथियुस 5:9–10

➢ **त्रिएकता की तस्वीर :** बाइबल कहती है कि जब पति और पत्नी अपनी अपनी जिम्मेदारियों को भलि प्रकार से पूरा करते हैं तो उन्हें परमेश्वर की ओर से आशीष प्राप्त होती है। परमेश्वर ने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को हम एक त्रिएकता के द्वारा प्रगट किया है, जो एक ही में समावेशित तो हैं परन्तु तीन भूमिकाओं में सक्रिय हैं।

- हालांकि त्रिएकता के प्रत्येक सदस्य की अपनी अनोखी भूमिका है फिर भी वे आदर, सम्मान और अहमियत में समान है। परमेश्वर पुत्र, परमेश्वर पिता के अधीन है। परमेश्वर आत्मा परमेश्वर पुत्र के अधीन है। फिर भी वे तीनों एक हैं। इसी प्रकार पति मसीह के अधीन होता है और पत्नी पति के अधीन।

- पति व पत्नी दोनों अलग अलग होते हैं लेकिन वे विवाह के माध्यम से एक हो जाते हैं। परमेश्वर हमारा सहायक और हमारा सिर दोनों है। विवाह के बीच में भी वह हमारा सहायक व

सिर दोनो होता है। इस तरह से प्रेम करने के द्वारा हम अपने बीच में परमेश्वर की सम्पूर्ण तस्वीर को निर्माण कर लेते हैं।

❖ **परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना:** क्योंकि परिवार परमेश्वर की योजना है(किसी मनुष्य की नहीं) इसलिए उस योजना को जानने के लिए हमें परमेश्वर के वचन को देखना बहुत जरूरी है। हो सकता है आज विवाह को लोग कई तरीकों से परिभाषित करें परन्तु परमेश्वर ही ने विवाह को स्थापित किया था।

➢ **एक आदमी और एक औरत**: बाइबल में स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि विवाह एक आदमी और एक ही औरत से किया जाना चाहिए। समलैंगिक विवाह करना तथा एक ही समय पर बहुत एक से ज्यादा पत्नी रखना बाइबल संगत विचार नहीं है।

- o 1 कुरिन्थियों 7:2
- o रोमियों 1:26–28
- o मरकुस 10: 6–9
- o 1 कुरिन्थिया 6:9–10

➢ **एक तन हो जाते हैं**: विवाह ही एक ऐसा सम्बन्ध था जिसमें परमेश्वर द्वारा यौन सम्बन्ध बनाने का प्रयोजन रखा गया। लोगों के प्रति आकर्षित होना और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने की जिज्ञासा उत्पन्न होना एक सामान्य बात है लेकिन परमेश्वर की योजना के अनुसार हमें केवल विवाह के अन्तर्गत ही यौन सम्बन्ध बनाना चाहिए। विवाह के पश्चात आदमी और औरत को एक तन होने के लिए कहा गया है। ऐसा करने से उन्हे बच्चों व आपसी आनन्द का अवसर मिलता है। विवाह से बाहर किसी भी प्रकार यौन सम्बन्ध निषेध है।

- o 1 कुरिन्थियों 7:1–5
- o 1 कुरिन्थियों 6:18
- o उत्पत्ति 2:24
- o 1 थिस्लुनिकियों 4:3–5

➢ **असमान जूए में न जुतो :** परमेश्वर चाहता है कि हमारे परिवरो में उसका स्वरूप प्रगट हो तथा वे परमेश्वर की महिमा करें। यह काम केवल तभी सम्भव हो पाता है जब परिवार के दोनों सदस्य यीशु मसीह के समर्पित अनुयायी हों। यह हमेशा सम्भव नहीं हो पाता; क्योंकि बहुत सी संस्कृतियों में स्त्री व पुरूष अपने जीवन साथी का चुनाव नहीं कर पाते हैं। बहुत से मामलों में विवाह के बाद परिवार का एक सदस्य मसीह में विश्वास करने लगता है। लेकिन जहां तक सम्भव हो हमें विवाह के लिए एक विश्वासी अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले व्यक्ति का ही चुनाव करना चाहिए।

- o 2 कुरिन्थियों 6:14
- o 1 कुरिन्थियों 7:39

➢ **छोड़ना और जुड़ना :** जब किसी का विवाह होता है तो उस रिश्ते को बाकि के सभी रिश्तों से ज्यादा प्राथमिकता दी जाती है। पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ अलग घर बसा लेता है। उसकी पत्नी के सम्बन्ध के कारण माता पिता के साथ सम्बन्ध को दूसरा स्थान प्राप्त होता है। वे दोनो मिलकर एक नये परिवार की स्थापना करते हैं। अगर स्थान की बात करें तो केवल परमेश्वर को ही विवाह से ऊँचा स्थान प्राप्त होता है।

- o उत्पत्ति 2:24
- o इब्रानियों 13:4

➢ **फूलो फलो और जगत में भर जाओ:** स्त्री व पुरूष के लिए परमेश्वर की सर्वप्रथम आज्ञा यही थी कि वे फूले फलें और सारे जगत में भर जाए– अर्थात बच्चे जने। सन्तान उत्पत्ति विवाह का परिणाम है हमें इसे प्रोत्साहित करना व उसका आनन्द उठाना चाहिए। बच्चे परमेश्वर की ओर से आशीष हैं। कुछ परिवारों में बच्चे नहीं होते लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि इस कारण उनका विवाह कम मान्य है बल्कि हो सकता है कि उनके लिए यह ही परमेश्वर की योजना हो। परमेश्वर ने हमें एक और आज्ञा दी है अर्थात सारे जगत के लोगों को चेला बनाने की आज्ञा। जिन परिवारों में बच्चे नहीं हैं वे अपनी

शक्ति सुसमाचार प्रचार व शिष्यता द्वारा आत्मिक बच्चे उत्पन्न करने में लगा सकते हैं और परमेश्वर के लिए भले कामों से फलदायी हो सकते हैं।

- उत्पत्ति 1:28
- भजन 127:3
- यिर्मयाह 29:6
- कुलुस्सियों 1:10

➢ **जीवन के लिए एक साथः** विवाह में दौरान की जाने वाली प्रतिज्ञाएं सम्पूर्ण जीवन काल तक बनी रहती हैं। दो लोग एक तन हो जाते है, और उन्हें हमेशा एक साथ रहना होता है। अगर एक साथी की मृत्यु हो जाए तो दूसरा चाहे तो दूसरा विवाह कर सकता है। लेकिन अगर उनमें से कोई एक विवाह की प्रतिज्ञाओं का उल्लंधन करता है तो वह तलाक लेने की अनुमति है। मगर कई लोग एक दूसरे को क्षमा करके, फिर से अपने परिवार पर ध्यान देते हुए एक साथ बने रहते हैं।

- 1 कुरिन्थियों 7:10–15
- रोमियो 7:3
- मत्ती 19:3–9
- मलाकी 2:15

❖ **पूरी तरह से असिद्धः** परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना कोई भारी काम नहीं है लेकिन इस पापमय संसार में यह ज़िम्मेदारी असिद्ध लोगों के हाथों में सौंपी गयी है। इसलिए इस सम्बन्ध को सिद्ध होना असम्भव होता है। पति पत्नी के रिश्तों में परमेश्वर को हमेशा महिमा नहीं मिलती लेकिन फिर भी हर एक जन को अपने लक्ष्य तक पहुचने का भरसक प्रयास करना चाहिए। परिवारों में हमेशा सोहार्द बनाये रखना तथा परमेश्वर के स्वरूप को प्रगट करना मुश्किल काम होता है। इसीलिए हमें पवित्र आत्मा पर निर्भर व परमेश्वर के प्रति समर्पित होने की जरूरत होती है।

➢ **अविवाहित** : हर एक स्त्री या पुरूष विवाह नहीं करेगा। अविवाहित महिलाओं को अपने माता पिता का आदर करना चाहिए, और उन अधिकारियों के प्रति समर्पित होना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने आपके ऊपर रखा है, जैसे सरकारी अधिकारी, कलीसिया के अगुवे व कार्यकर्ता। प्रेरित पौलुस अविवाहित रहने को परमेश्वर की ओर से एक वरदान मानते हैं। यदि आपको कोई उपयुक्त जीवन साथी मिल रहा है या आपके पास अविवाहित रहने का और कोई उचित कारण है तो आप अपनी उस अवस्था को परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल कर सकते हो।

➢ **गैर विश्वासी जीवन साथीः** कई लोगों के जीवन साथी गैर विश्वासी हो सकते हैं। हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए तथा उनके सामने अपनी गवाही रखनी चाहिए। यदि वे जाना चाहें, तो उन्हे जाने दें (1 कुरिन्थियों 7:14–16)

चर्चा

❖ यदि आप विवाहित नहीं हैं, तो आपको भविष्य में अपने परिवार के लिए क्या आशा है? उस परिवार को खड़ा करने में आपको किन दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा?

❖ एक विवाहित जोड़ा किस प्रकार अपने जीवन में परमेश्वर के स्वरूप को प्रगट करता तथा परमेश्वर को महिमा देता है ? परिवार इसे कैसे करता है? अविवाहित व्यक्ति इस काम को कैसे करता है?

❖ बाइबल के अनुसार एक स्त्री व पुरूष की क्या भूमिका है? क्या उनके कामों से आपको कुछ असहजता महसूस होती है? आपके हिसाब से कौन सा काम कठिन है? क्या ये काम उन कामों से बिलकुल अलग हैं जो आपके समाज में स्त्री व पुरूषों से अपेक्षा की जाती है?

- विवाह और उद्देश्य के सम्बन्ध में परमेश्वर की परिभाषा आपके समाज, देश या आपके राज्य की परिभाषा से अलगी है?
- वर्तमान में आप विश्वासयोग्यता के साथ किस प्रकार परमेश्वर की तस्वीर को प्रगट कर सकते हैं?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ इस अध्याय को समाप्त करें। प्रार्थना करें कि आपके प्रतिभागी दूसरों को परमेश्वर के प्रेम के प्रति आकर्षित करते हुए, विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की तस्वीर को प्रगट कर सकें। प्रार्थना करें कि वे त्याग और आदर के साथ अपने जीवन साथी को प्रेम व उनका आदर कर सकें। प्रार्थना करें कि जो लोग विवाहित हैं वे अपने वैवाहिक जीवन को मजबूत बनाते हुए उसके द्वारा कलीसिया के साथ मसीह के रिश्ते को प्रगट कर सकें। प्रार्थना करें कि अविवाहित लोग सन्तुष्ट रहें। यदि वे विवाह करना चाहते हैं तो प्रार्थना करें कि उन्हें परमेश्वर को भय मानने वाला जीवन साथी मिले। प्रार्थना करें कि विवाह को सबके द्वारा सुरक्षा व आदर मिलने पाए।